दस कदम : 80/100 मार्क्स

Ten Steps : 80/100 Marks

शिक्षा और भिखारी राजा

अज्ञानता की भीषणता को देख एक ज्ञानी भिखारी बन बैठा और राज्य की राजधानी के मुख्य चौराहे पर सम्राट की मूर्ति के ठीक नीचे अपने ज्ञानी संदेशों के उच्चारणों को हर रोज सुनाता और सर्वधर्म समभाव के अनुयायी लोग कुछ सिक्के उसकी मैली चादर पर खन–खन करते गिरा देते। बात आयी–गयी हो गयी।

एक दिन तेजी से दौड़ता हुआ एक रथ चौराहे पर आकर रुका और राज्य के कुछ गुप्तचर बिजली की गति से कूदे और भिखारी को दबोच लिया।

भयातुर भिखारी चिल्लाया, क्या हुआ? मैं तो एक धर्मनिरपेक्ष भिखारी हूँ।

भिखारी काँपते हुए स्वर में दोबारा बोला, मैं न राज्य विरोधी हूँ, न धनवान, न शक्तिशाली न राजनीतिक अस्थिरता लाने वाला, हाँ मैं ज्ञानी जरूर हूँ।

तब तक चार गुप्तचरों ने उसे कंधों पर उठा लिया और रथ की ओर बढ़ चले।

भिखारी की जुबान बन्द हो गई। बहते हुए आँसुओं के साथ उसने फिर विनती की और कहा, न मैंने किसी का अधिकार छीना है, न किसी का कोई पद बेचा है, गुप्तचर विभाग की कहीं गलती हो रही है, मैं निर्दोष हूँ।

गुप्तचरों ने भिखारी को रथ में पटका। रथ में बैठे सेनापति ने कहा, इसके हाथ और पाँव मुझे दिखाओ। मैले-कुचैले हाथ-पाँव देख, सेनापति की आँखें विस्मय और अविश्वास से फैल गईं।

रथ को राजमहल की तरफ ले चलो। सेनापति ने कड़क कर कहा।

भिखारी ने रोते हुए एक बार फिर मुँह खोला और कहा, मान्यवर, न मैं षड्यंत्रकारी हूँ, न विदेशी, न गुप्तचर, न आंतकवादी, न कोई दलाल हूँ, न ही कोई सक्षम नेता या अधिकारी हूँ जो गठबन्धन बिठाने या गिराने में मेरा हस्तक्षेप हो।

भिखारी के भय की सीमा नहीं थी। उसने तो कैदखाने का सोचा था, पर राजमहल?

महामंत्री और प्रशासकों की आवाजों ने उसका स्वप्न तोड़ा। महामंत्री भिखारी को सम्बोधित कर रहे थे, बरसों पहले हमारे पूर्वज महाराजा जब जंगल में शिकार खेलने जा रहे थे तो डाकुओं ने उन पर हमला बोल दिया। केवल राजकुमार बचे, रक्षकों समेत सबको मौत के घाट उतार दिया गया था। फिर गुप्तचरों से सूचना मिली की लाशों के अम्बार में आपको मृत जान, जिन्दा ही छोड़ गए थे। आपकी खोज बरसों से जारी रही। पूर्व में महाराजा द्वारा बतलाए गए आपके पाँवों और हाथों की अंगुलियों में दस-दस चक्र के निशानों से पहचान लिया गया कि आप ही महाराजा के बेटे और राजकुमार हैं। यह राजपाट अब आपका है।

कालचक्र घूमा और उसने ज्ञानी भिखारी को राजकाज की बारीकियों में दक्ष बना दिया। राजा भिखारी को अचानक एक दिन, महल की एक कोटड़ी में अपने पुराने फटे कपड़े, चादर और कटोरा मिला। अंधेरे में चुपचाप राजा महल से निकल पड़ा, एक गुफा में राजा ने वेशभूषा उतारी और पुराने वही कपड़े पहन कर, चादर और कटोरा

सम्हाला। राजधानी के चौराहे पर वापिस भीख माँगने लगा, चौराहा छोड़ जब वह बाजार में निकला तो देखा कि दुकानों में राजा की वेशभूषा में उसकी तस्वीर सजी थी। व्यापारी आराधना कर रहे थे, जगह–जगह उसकी मूर्तियाँ लगी थीं। पुजारी उनकी आरतियाँ उतार रहे थे। भीख के लिए कटोरा बढ़ाने पर कहीं गालियाँ मिलीं तो कहीं दुत्कार। एक तरफ तो कोई उस को गाली निकाल रहा था तो दूसरी तरफ औरतें उसकी मूर्ति को दूध चढ़ा रही थीं। कहीं उसकी प्रशंसा में भाषण हो रहे थे तो कहीं कृपादृष्टि के लिए प्रशंसा–पत्र लिखे जा रहे हैं। भिखारी राजा ने सोचा, मैं इनका भाग्यविधाता हूँ। मेरी जनता अज्ञानी और अशिक्षित है। राज्य में देव और दानव, अच्छे इनसान और बुरे इनसान भरे पड़े हैं। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि शिक्षा प्रणाली का यहाँ पूर्ण अभाव है। पूरा राज्य अशिक्षित है। किसी भी राजा का प्रजा के साथ रिश्ता कितना भी मजबूत क्यों न हो, शिक्षा और ज्ञान के अभाव में सारी मजबूती दम तोड़ देती है। अतः राज्य में शिक्षा तंत्र का कोई नया पैमाना तय करना होगा। अगर युवा शिक्षित नहीं होगा तो राज्य का विकास नहीं हो सकता। एक विद्यार्थी का जीवन कई शिक्षकों के शिल्प–कौशल का प्रतिबिम्ब होता है—जो विकास–गति को आगे बढ़ाते हैं। किसी भी नई पीढ़ी का अपनी पिछली पीढ़ी के ज्ञान से काम नहीं चलता। चूँकि राज्य के पास ज्ञान पाने के सीमित विकल्प हैं अतः मेरा अनुभव और ज्ञान इन सीमित विकल्पों को असीमित अवसरों में परिवर्तित कर देगा। राज्य की जनता को गाँठ बंधा दूँगा कि ज्ञान का क्षेत्र लगातार विस्तारित होने वाला क्षेत्र है। यह जरूरी नहीं है कि हम भी ज्ञान के क्षेत्र में पूर्वजों की तरह लीक पर चलें। मैं खुले मन से शिक्षा के लिए नया मार्ग प्रशस्त करूँगा। जो कुछ भी मैं करूँगा, वह राज्य के भविष्य के निर्माण के लिए ही करूँगा। इतिहास की यही सबसे बड़ी मजबूरी है कि वह अपने पन्नों में हर तरह की भरपाई की अनगिनत गवाहियों को तो समेट सकता है, लेकिन सदैव के लिए अशिक्षत जनता की अज्ञानता की भरपाई की गवाही को वह कभी समेट नहीं पाता।

अचानक भिखारी भेषधारी राजा का चेहरा दिव्य मुस्कान से खिल

उठा। मुस्कराता हुआ वापिस महल में लौट आया। राज्य में शिक्षा प्रणाली को विकसित करने में अपना पूरा जीवन बिता दिया। आज उसका राज्य पूर्ण रूप से स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर है—वह एक सोने की चिड़िया है। प्रतिभा इस्तेमाल करने की योग्यता—भिखारी राजा को ही सिखलानी पड़ी।

80/100 मार्क्स के लिए : पहला कदम
First Step : Towards 80/100 Marks

प्रतिभा का इस्तेमाल न कर पाने की अयोग्यता
Inability to use Talent

ज्यादातर बच्चों की जिन्दगी में सबसे दुखद बात यह है कि वे 80/100 मार्क्स की इच्छा दिल में लिए हुए ही रह जाते हैं। वे चाहते हुए भी मार्क्स नहीं ले पाते हैं। वे ज्यादा पढ़ कर भी ज्यादा नम्बर नहीं ले पाते। वे ज्यादा पढ़ने की वजह के साथ-साथ गलत तरीके की पढ़ाई से कम नम्बर लाते हैं और जिन्दगी में सबसे ज्यादा दुखी और मायूस हो जाते हैं। बच्चे अकसर अपनी प्रतिभा का सिर्फ 20-25 प्रतिशत ही इस्तेमाल कर पाते हैं। देश में हर साल करीब 4 लाख इंजीनियर बनते हैं—जो अपनी असली प्रतिभा का इस्तेमाल भी इतना कम ही कर पाते हैं क्योंकि अपना स्वयं का करोबार नहीं करते, नौकरी करना ही पसन्द करते हैं।

जो बच्चे कोशिश ही नहीं करते, वे कुछ करने से पहले ही असफल हो जाते हैं।

क्या आपको यह सोच कर कभी हैरानी हुई है कि क्यों कुछ बच्चे अपने 80/100 मार्क्स के लक्ष्य पर नहीं पहुँच पाते ? वे हमेशा विपरीत और नाजुक परिस्थितियों में फ्रस्ट्रेड (Frustrated) क्यों महसूस करते हैं? ऐसा क्यों होता है कि कुछ बच्चे लगातार 80/100 मार्क्स के साथ हमेशा सफल होते रहते हैं, जबकि ज्यादातर बच्चे तृतीय श्रेणी में सफल होते हैं? जीवन में जिसने भी कोई खास मुकाम हासिल किया, वह अनुशासन के बिना नहीं किया है। बिना अनुशासन से की गई पढ़ाई से बच्चे बहुत-कुछ करने की कोशिश तो करते हैं—मगर उनको हासिल कुछ भी नहीं होता है। अनुशासन से अध्ययन की योजना पर अमल करने से पहले जाँचना जरूरी है कि अध्ययन में योजना की सफलता की कितनी सम्भावना है। 80/100 मार्क्स के सपनों

की उड़ान को हकीकत के धरातल से मत टकराने दो। नियमित अध्ययन और प्रैक्टिकल ही एकमात्र योजना होनी चाहिए।

जब हमारी पढ़ने–लिखने की प्राथमिकताएँ और योजना सही नहीं होतीं तो हम समय की बरबादी करते हैं और बच्चा यह महसूस भी नहीं करता कि समय की बरबादी से आगे जीवन की बरबादी निश्चित है। प्राथमिकताओं को तय करने में हमें अनुशासन की जरूरत पड़ती है, जिससे हम वह करें जो जरूरी है, बजाए इसके कि हम करना चाहते हैं या हमें अच्छा लगता है। बच्चे किसी काम को दिल से करने की बजाए उसकी हार–जीत को ज्यादा वजन देते हैं। देश की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। ये युवा अपनी प्राथमिकता निर्धारित करके अगर अनुशासन के साथ कार्य और अध्ययन करें तो देश की 30 प्रतिशत जनसंख्या, जो गरीबी रेखा के नीचे रहती है, उसे ऊपर उठाने में मदद मिल सकती है।

भौतिक शास्त्र अथवा किताबों के नियम घोटने या रटने से सफलता नहीं मिलती, बल्कि यह उन्हें समझने, अमल में लाने और प्रैक्टिकल करने से मिलती है। जिस तरह कोई व्यक्ति गणित की पुस्तक के ऊपर बैठने से सवाल हल नहीं कर सकता, उसी तरह कोई भी बच्चा बिना सही तरीके से की गई पढ़ाई से अच्छे नम्बर हासिल नहीं कर सकता। प्रैक्टिकल द्वारा किए गए काम और पढ़ाई इसीलिए आसान लगते है। बच्चे जो भी प्रैक्टिकल काम करते हैं, उससे उनको बुनियादी चीजों में कुशलता हासिल हो जाती है।

श्रेष्ठतम अंकों का हासिल करना कोई किस्मत की बात नहीं, यह मेहनत, प्रैक्टिकल और बहुत–सारी प्रैक्टिस का नतीजा होता है। मेहनत, प्रैक्टिकल और अभ्यास बच्चों की पढ़ाई–लिखाई को बेहतर बनाते हैं, फिर चाहे वह कोई भी विषय पढ़ रहा हो। बिना प्रैक्टिकल और अभ्यास के अध्ययन एक ऐसा गुब्बारा है, जिसमें चाहे जितनी हवा भर दें (अध्ययन कर लें), वह बड़ा नहीं हो सकता, परन्तु प्रैक्टिकल और अभ्यास के साथ अध्ययन एक ऐसा गुब्बारा है कि उसमें से कितनी भी हवा निकाल दो, वह हमेशा बड़ा ही रहेगा। अध्ययन हमेशा याद ही रहेगा।

युवा नए तरीके से अध्ययन करने की जोखिम उठाता है तो वह कभी भी कामयाबी हासिल कर सकता है। शोहरत और कामयाबी की उनके अन्दर जो ललक होती है, जल्दी ही वह अपना रास्ता तलाश लेती है।

80/100 मार्क्स की सफलता सिर्फ एक संयोग मात्र नहीं है। यह उन बच्चों और टीनएजर्स के नजरिये का नतीजा होता है जिन्हें वे खुद चुन सकते हैं। इसलिए अच्छे मार्क्स हासिल करना एक चुनाव की बात है, न कि तुक्के की। एक अनुमान के अनुसार भारत देश में हर साल करीब 30 लाख युवा स्नातक बनते हैं, जिनमें 80/100 मार्क्स पाने वालों की संख्या करीब 1.5 लाख ही होती है।

अच्छे और खराब नम्बरों के कारणों पर बहुत खोज हुई है। जरूरत है तो हमें अच्छे नम्बर पाने वाले नौजवानों के इतिहास से कुछ सीखने की। जब हम अच्छे नम्बर पाने वाले नवयुवकों की जीवनियों पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि सभी में निस्संदेह कुछ खास गुण हैं, चाहे वे किसी भी समय के रहे हों। अच्छे अंक हमेशा अपने निशान छोड़ जाते हैं। अगर सावधानी और विशेष तरीकों से पढ़ने वाला नवयुवक इन निशानों को पहचान ले और अच्छे अंक हासिल करने वाले टीनएजर्स के गुणों और तरीकों को अपने विद्यार्थी–जीवन में अपना ले, तो हम भी अच्छे अंकों से सफल हो जाएंगे। 80/100 मार्क्स कोई मिस्ट्री (Mystery) नहीं है, यह तो सिर्फ कुछ बुनयादी उसूलों और तरीकों का लगातार पालन करने का नतीजा है। कम अंकों का पाना सही मायने में कुछ गलतियों को पढ़ाई में लगातार दोहराने का नतीजा है। इसका उलटा भी उतना ही सही है। असाधारण युवा, अच्छे अंकों के लिए अवसर ढूँढ़ता है, जबकि साधारण युवा सिर्फ अपने पास होने की सुरक्षा खोजता है। साधारण और मूर्ख युवाओं के विचार एक जैसे होते हैं—वे अपने विचार व अध्ययन का तरीका बदलते नहीं। क्योंकि अंधेरे में सभी रंग समान होते हैं।

80/100 मार्क्स के लिए : दूसरा कदम
Second Step : Towards 80/100 Marks

ज्यादा अध्ययन और लगातार अध्ययन का नतीजा अच्छा नहीं होता।

अल्बर्ट आईंस्टीन और पानी से भरा गिलास
Albert Einstein and a glass full of water

जर्मनी के उल्म में जन्मे अल्बर्ट आईंस्टीन के इंजीनियर चाचा ने गणित में अभिरुचि जगाई और पाँच वर्ष की उम्र में पिता के दिए

चुम्बकीय कंपास और 12 वर्ष की उम्र में यूक्लिड की ज्यामितीय (Geometry) से परिचय ने अल्बर्ट की दुनिया बदल दी। नोबल पुरस्कार विजेता महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट ने 1905 में ज्यूरिख विश्वविद्यालय से पीएचडी की डिग्री हासिल की। एक व्याख्यान में अपने चहेते विद्यार्थियों को स्ट्रेसेज इन स्टेडी (Stresses in study) के बारे में समझा रहे थे। उन्होंने पानी से भरा एक गिलास उठाया और उसका वजन करीब चौथाई पौंड बतलाया। अल्बर्ट बोले, यह कोई खास बात नहीं है कि गिलास का वजन क्या है? स्ट्रेस इस बात पर निर्भर है कि आप इसे कितने समय तक उठाये रखते हैं। यदि मैं एक मिनट तक इसे उठाये रखूँ तो कोई परेशानी नहीं। एक घण्टे तक उठाये रखूँ तो मेरा हाथ दर्द करने लग जायेगा। और यदि इसे पूरे दिन भर उठाए रखूँ तो शायद मैं चक्कर खाकर गिर जाऊँ। वजन तो वही रहेगा, पर जितनी देर तक मैं इसे उठाए रखूँगा, उतना ही यह भारी और असहनीय हो जाएगा। इसी प्रकार लगातार 10–12 घण्टों के अध्ययन से दिमाग की भी स्थिति ऐसी हो जायेगी—जैसे मेरे हाथ की होगी। और घोर एवं विचित्र स्थिति तो तब होगी जब यह सिलसिला विद्यार्थी–जीवन में, साल–दर–साल चलता रहेगा। आवश्यकता है, हमें थोड़ा–थोड़ा और अन्तराल में अध्ययन करने की—तभी हम अध्ययन का बोझ आसानी से उठा पाएंगे।

व्याख्यान सुन रहे छात्रों को अधिक घण्टों के अध्ययन का फर्क समझ में आ गया था।

आज हमें यह देख कर अफसोस होता है कि आम माँ–बाप और युवा तरक्की की दौड़ में इतने अंधे हो गये हैं कि वे अपना और अपनी भावी सन्तानों का हित और अहित भी नहीं समझ रहे हैं। अधिक अध्ययन कोई बड़ी तरक्की की राह नहीं दिखा सकता।

अध्ययन का टाइम–टेबल वह गाइड है जो आपको अक्लमन्दी से समय खर्च करना सिखाता है।

— डा. राम बजाज

80/100 मार्क्स के लिए : तीसरा कदम
Third Step : Towards 80/100 Marks

दूरदर्शिता की कमी Lack of forsightness

आज के नवयुवक श्रेष्ठता या अंकों का ऊँचा स्तर क्यों नहीं हासिल कर पाते? इसका सबसे बड़ा कारण दूरदर्शिता की कमी है। हमें अपनी नजर, जो 80/100 मार्क्स मुमकिन है, उससे आगे ले जानी चाहिए। आगे नवयुवक जो कुछ भी देखते हैं वास्तविकता बनने से पहले वह एक सपना ही होता है। पढ़ाई–लिखाई में उत्साह, सही रास्ता और 80/100 मार्क्स का सही उद्देश्य ही आपके सपनों को हकीकत में बदलेगा।

सलाह लेनी ही है तो उन इनसानों और अध्यापकों से लो जिन्होंने कुछ कर दिखाया हो। वह बार–बार फैल होने वाली मूर्ति, अच्छे अंकों की प्राप्ति का क्या रास्ता दिखायेगी जो खुद ही अपने जीवन में भटकी हुई है। अगर उसे अच्छे अंक प्राप्त करने का रास्ता ही मालूम होता तो क्या उस रास्ते पर वह खुद नहीं चलती? मेहनत युवा पीढ़ी को अच्छे अंकों की कीमत सिखाती है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि अच्छे टीचर और माँ–बाप अपने बच्चों को अच्छे अंकों की अहमियत को समझायें।

करामाती तोता

नॉटिंघम इंग्लैंड की एक कॉलेज के होस्टल में रह रहा विद्यार्थी मि. साइमन जोन्स अपने पिता मि. फ्लेचर से अकसर इस बहाने मोटी–मोटी रकम मंगवाया करता था कि उसने एक ऐसा तोता खरीदा है जो उचित प्रशिक्षण व अभ्यास हासिल होने पर इनसानों की तरह बोल सकता है। मि. साइमन उसे प्रशिक्षण और अभ्यास करवा रहा है जिसके लिए काफी धन की जरूरत है। पिता मि. फ्लेचर पौंड भेजते रहे। अन्त में पुत्र ने फैक्स–संदेश किया कि तोता अंग्रेजी बोलना पूरी तरह सीख गया है, लेकिन अब फ्रेन्च भाषा बोलना सीख रहा है, जिसके लिए उसको पाँच हजार पौंड की आवश्यकता है। पिता मि. फ्लेचर ने प्रतिउत्तर दिया कि वह पाँच हजार पौंड लेकर खुद ही आ रहे हैं ताकि वह तोते को अंग्रेजी बोलते हुए सुन सकें। पुत्र घबरा गया।

कहाँ है वह करामाती तोता? —पिता मि. फ्लेचर ने आते ही अपने बेटे से पूछा।

डेडी, मुझे यह बताते हुए सख्त अफसोस हो रहा है कि मुझे तोते की गर्दन मरोड़ कर उसे मार देना पड़ा। —साइमन बोला।

क्यों मार देना पड़ा? —पिता के माथे पर बल पड़ गये और वह संदेह की नजरों से बेटे साइमन की तरफ घूरने लगे।

आज सुबह जब मैंने उसे (तोते) बताया कि आप उससे मिलने आ रहे हैं तो वह पूछने लगा कि क्या तुम्हारे डेडी अभी भी बैंक से गबन किए हुए पाँच लाख पौंड से अपना बिजनैस चला रहे हैं?

अच्छा किया! ठीक से तो गर्दन मरोड़ दी थी ना! कहीं बच तो नहीं गया कम्बख्त? —पिता ने घबराते हुए पूछा। ऐसे माँ–बाप में दूरदर्शिता है कहाँ?

असफल विद्यार्थी दो तरह के होते हैं। एक वे, जो पढ़ते हैं लेकिन सोच कर नहीं पढ़ते, दूसरे वे, जो पढ़ने के लिए सोचते तो हैं लेकिन कुछ पढ़ते ही नहीं। सोचने की क्षमता का पूरा इस्तेमाल किए बिना अच्छे अंकों की अभिलाषा ठीक उसी तरह है जिस तरह बिना गोल–पोस्ट के गोल की। अपने सामर्थ्य को पहचानिए! ऐसा कोई विषय नहीं है जिसे आप आसान नहीं बना सकते। कोई भी विषय या चैप्टर हाथ में लें, उसका पूरे विश्वास के के साथ अध्ययन करें, फिर देखिए कि 80/100 मार्क्स आपके पैर चूमते नजर आएंगे। ईश्वर ने जब मस्तिष्क दिया है तो आपको सोचने, सपने सजाने और अध्ययन करने की योग्यता भी दी है।

इनसान को बड़े दिमाग का इनाम
The greatest gift of Mainkind : Mind

भले ही कुदरत ने इनसान को आकाश में उड़ने की कला नहीं दी हो, हरिण की तरह तेज छलाँगें मारने की शक्ति नहीं दी हो, बाज की तरह पैनी नजर नहीं दी हो और भले ही शेर की तरह उसके बाजूओं में मजबूती प्रदान न की हो—परन्तु उसने इनसान को सोचने की क्षमता को क्रियान्वित करने की शक्ति प्रदान करने के कारण उसने कुदरत पर दूसरे जीवों की तरह हवाई जहाज से उड़ना, तेज गति से चलने के लिए मोटर गाड़ी, तेज नजर के लिए

औजार व बाजुओं में शक्ति के लिए रोबोट का अविष्कार कर डाला। बहुत अफसोस की बात है कि बहुत कम इनसान और विद्यार्थी इस महान् तोहफे, मस्तिष्क की क्षमता का पूरा इस्तेमाल करते हैं या कर पाते हैं। मस्तिष्क का अपना अर्थशास्त्र होता है।

जिन युवाओं ने मुसीबतों को झेला है, नए तरीकों से अध्ययन किया है, वे उन युवाओं की तुलना में कहीं ज्यादा आत्मविश्वास से भरे हैं, जिन्होंने अध्ययन की शैली में बिल्कुल ही सुधार नहीं किया है। सच्ची सफलता इस अन्दाज से मापी जाती है कि आप जानते हैं कि आपने सही ढंग से अध्ययन को पूरा किया और अपने लक्ष्य 80/100 मार्क्स को प्राप्त किया है। भले ही आप 80/100 मार्क्स अर्जित करने में असफल रहे हों, परन्तु आत्म–हत्या कम अंकों का स्थायी समाधान नहीं है। लगातार प्रैक्टिस और प्रदर्शन (Exposure) के जरिए हम अच्छे मार्क्स प्राप्त कर सकते हैं। युवाओं की दिक्कत यह है कि उन्होंने अपने–आप को एक घेरे में बाँध लिया है। अपने अध्ययन के लिए वही पुराने नियम, कायदे और विषय तय कर रखे हैं, बिना सोचे कुछ भी करते रहना वर्तमान और भविष्य की हत्या है। दिशाहीन कोरी कल्पना और अध्ययन का पुराना ढर्रा भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते। अच्छे नम्बर नहीं आ सकते।

प्रार्थना भी सोच–समझ कर करने की आवश्यकता है। अध्ययन के लिए कोरी प्रार्थना काफी नहीं है।

—डा. राम बजाज

प्रार्थना Pray

मन्दिर के पुजारी ने एक नवयुवक नौजवान को प्रसाद थमाते हुए कहा, बेटा, भगवान की प्रार्थना के लिए आवश्यक नहीं है कि तुम्हारी प्रार्थना बड़े–बड़े, सुन्दर और लच्छेदार शब्दों में सजी हुई हो। प्रार्थना और पूजा के लिए आवश्यक नहीं है कि वे बहुत लम्बी–लम्बी हों। प्रार्थना–अर्चना के लिए यह भी जरूरी नहीं है कि कौनसी भाषा में भगवान सुनेगा, उसके लिए किसी भी भाषा का प्रयोग करो, वह सभी तरह की भाषा को समझता है। प्रार्थना के लिए यह भी आवश्यक नहीं है कि तुम बहुत पढ़े–लिखे हो। यह भी जरूरी नहीं

है कि तुम कोमल हृदय के हो। सहज–सरल ढंग से और सच्चे मन से की गई प्रार्थना ही काफी है। प्रार्थना के लिए केवल भावना की आवश्कता होती है। भगवान शब्दों और ज्यादा समय से नहीं, तुम्हारी भावना से पसीजता है। तुम रोज घण्टों प्रार्थना करते हो, अच्छा तो यह होगा कि इस प्रार्थना के समय को अपने अध्ययन और अभ्यास में लगाओ। हालाँकि प्रार्थना और पूजा की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन यह इतना अधिक भी न हो कि फिर इसकी महत्ता ही न रहे। जरूरत है तुम्हारे कदमों की दिशा बदलने की। भगवान तो श्रद्धा से की गई कुछ क्षणों की प्रार्थना से भी खुश हो जायेंगे।

नौजवान, पुजारी की बातें सुन कर अपने सामर्थ्य को पहचान गया और खुद को परिभाषित करने के लिए जो उसके पास विभिन्न प्रकार के अध्ययन के विकल्प थे, उनको खुद के मापदण्डों पर निर्धारित किया। अधिक प्रार्थना में लगने वाले समय को कमजोर विषयों पर लगाकर प्रवीणता हासिल की और रिकार्ड अंक अर्जित किए।

यानी ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिसे करने में दुनिया के सभी युवा सफल न हों। जो युवा असफल या कम अंक अर्जित करते हैं उसके पीछे एक ही कारण है कि उस विषय से सम्बन्धित अभ्यास और अध्ययन अधिक मात्रा में नहीं किया गया था। लेकिन आप भी निरन्तर सच्चे अभ्यास, मेहनत और अध्ययन से औरों के समकक्ष 80/100 मार्क्स ला सकते हैं।

गति में ही फड़फड़ाहट होती है। ध्वजा, हवा और हवा का वेग, तीनों मिल कर ही कम और ज्यादा फड़फड़ाहट करते हैं।

फड़फड़ाहट

एक मार्गदर्शक अध्यापक और उनके छात्र, दर्शनार्थ मन्दिर परिसर में पहुँचे तो मन्दिर की ध्वजा फड़फड़ा रही थी। उसे ताकते हुए एक छात्र बोला, सर, ध्वजा जोर से फड़फड़ा रही है।

दूसरा छात्र बोला, नहीं सर, ध्वजा केवल नजर आ रही है, फड़फड़ाहट तो हवा में है।

तीसरा छात्र बोला, नहीं, ध्वजा नजर आती है, हवा महसूस की जा सकती है, पर फड़फड़ाहट सुनी जा सकती है, सर।

मार्गदर्शक अध्यापक बोला, तुम तीनों अपनी जगह सही हो, परन्तु हवा के वेग और ध्वजा के प्रतिरोध से फड़फड़ाहट उत्पन्न होती है—इनमें से एक का भी साथ छूटना—फड़फड़ाहट का समाप्त होना समझो। जितनी ज्यादा गति हवा की होगी—फड़फड़ाहट उतनी ही अधिक होगी। इसी तरह अच्छे अंकों की फड़फड़ाहट भी अध्ययन के तरीके, अभ्यास और रियाज पर निर्भर करती है। इनमें से एक का भी साथ छूट जाना समझो कि आपके 80/100 मार्क्स के लक्ष्य का छूटना तय है। हर विद्यार्थी की अंकों की सीमा उसकी कल्पना की सीमा से अधिक नहीं हो सकती। हर गुजरा हुआ दिन अध्ययन के लक्ष्यों की सीमा को कम करता जाएगा—परन्तु नियमित अध्ययन तो जरूरी है। छात्रो! समझो कि कालेज के तीन साल ज्यादा जरूरी हैं या फिर कालेज के बाद के तीस साल जरूरी हैं ? यह सोचना आप युवाओं का काम है। कालेजों में मस्ती करते रहने से ज्यादा आपको भविष्य की हस्ती पर नजर रखनी होगी—आपको 80/100 अंकों का लक्ष्य पाना होगा। उस अध्ययन की कीमत कुछ भी ज्यादा नहीं आँकी जा सकती जिसे भुना सकना असंभव-सा हो।

छात्रों को फड़फड़ाहट का उत्तर मिल गया था। व्यवस्थित ढंग से अध्ययन की शुरुआत की और अच्छे अंक प्राप्त किए।

80/100 मार्क्स के लिए : चौथा कदम
Forth Step : Towards 80/100 Marks

अध्ययन में अच्छे अंकों की बात
The winning Edges in Study and Marks

अच्छे अंक हासिल करने के लिए युवाओं को हर विषय में श्रेष्ठता (Excellence) प्राप्त करनी होगी, न कि विषयों की जानकारियाँ। सिर्फ डिग्री हासिल करने के लिए पढ़ाई करना पागलपन है। हर विषय में मास्टरी करना,

उसे तरक्की का रास्ता दिखाती है, साथ में ऐसा भी कुछ नहीं है जिसे सुधारा या बेहतर परिणाम नहीं दिया जा सके। विद्यार्थी में जरा सोचने वाली बात होनी चाहिए। पहली या दूसरी रेंक वाले विद्यार्थियों के अंकों में बहुत बड़ा फर्क नहीं होता, वह मामूली अंकों के फर्क से ही प्रथम रेंक प्राप्त करता है। हमारी सोच में बस जरा–सी प्रथम रेंक हासिल करने की ललक होनी चाहिए—नतीजा आपके सामने होगा। श्रेष्ठतम अंकों वाला विद्यार्थी कोई सामान्य विद्यार्थी से दस गुणा ज्यादा काबिल तो नहीं होता। प्रथम रेंक वाले युवा के अध्ययन का तरीका ही सामान्य विद्यार्थी से दस गुणा ज्यादा काबिल, भरोसेमन्द और योजना के मुताबिक होता है। उन तीन विद्यार्थियों में क्या फर्क है जिनमें से एक पढ़ना जानता है और तरीके से पढ़ता है, दूसरा पढ़ना जानता ही नहीं और तीसरा पढ़ना तो जानता है, लेकिन पढ़ता नहीं? फर्क बहुत ज्यादा नहीं है। पढ़ना तो भोजन करने की तरह है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप कितना उसमें से पचा सकते हैं और क्या–क्या पचा सकते हैं। क्या पढ़ना और क्या नहीं पढ़ना, यह सब–कुछ आपके दिमागी मसल्स (Muscles) पर निर्भर करता है कि आप उसे कितना ग्रहण कर पाते हैं। दिमागी शक्ति को बढ़ाना, पढ़ाई में अनुशासन सीखना, सुनना, समझना और प्रैक्टिकल में तब्दील करना, फिर मन में सीखने की इच्छा रखना, ये ऐसे गुण हैं जो असामान्य युवा ही सोचते हैं और करते हैं। आप सोचते हैं कि 80/100 मार्क्स पाना कठिन काम है—तो इसकी कोशिश करके देखो। नतीजा बुरा तो नहीं हो सकता। थोड़े में कहें तो पढ़ने–लिखने वाले विद्यार्थी वो होते हैं जो किन्हीं भी हालातों में साहस और अक्लमन्दी से पढ़ाई करना तय करते हैं। अगर उनमें अक्लमन्दी और बेवकूफी, अच्छी और कम अच्छी पढ़ाई के बीच चुनाव करने की काबिलीयत है तो उनके पास अच्छे अंकों से परीक्षा पास करने का हुनर भी है। ऐसे युवा ही सही मायने में 80/100 मार्क्स के हकदार हैं। किसी भी विषय को जल्दी सीखने की कला का नाम ही अक्लमन्दी है। काबिलीयत वह खूबी है जो अध्ययन के तरीकों का इस्तेमाल करना सिखाती है। जब विद्यार्थी में विषय के इस्तेमाल और प्रैक्टिकल करने की काबिलीयत और इच्छा, दोनों होती हैं, तो उसे 80/100 मार्क्स पाने से कोई नहीं रोक सकता। इच्छा ही वह नजरिया और शक्ति होती है जो हुनरमन्द को अच्छे अंक पाने में सामर्थ्यवान (Competent) बनाती है। बहुत–से विद्यार्थी हुनरमन्द तो होते हैं, लेकिन सामर्थ्यवान नहीं होते, क्योंकि सही नजरिये और सोच के बिना काबिलीयत बेकार चली जाती है। बहुत बार

विद्यार्थी अक्लमन्दी और अध्ययन के सही फैसलों में फर्क नहीं कर पाता। अक्लमन्द विद्यार्थी का फैसला कभी गलत भी हो सकता है। अपने मार्गदर्शक को ध्यान से चुनिए और अपनी समझ का इस्तेमाल कीजिए। बड़े अफसोस की बात होती है कि बहुत–सी कोचिंग संस्थाएँ और उनके मार्गदर्शक चलती–फिरती इनसाइक्लोपीडिया (Encyclopedia) हैं, जो नाकामयाबी की जिंदा मिसालें हैं। युवाओं को परिणामों को देख कर, समझ कर ही अगला कदम तय करना चाहिए।

महान् वैज्ञानिक आइजक न्यूटन और संवाददाता

एक बार एक संवाददाता ने मशहूर एवं महान् वैज्ञानिक आइजक न्यूटन से पूछा, क्यों महोदय, क्या आपके सारे आविष्कार और सिद्धान्त किसी उच्च प्रेरणा के परिणाम हैं? रात को आप जागते हो तब क्या इन्हीं को सोचते रहते हैं? न्यूटन ने उत्तर दिया, नहीं भाई, गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त के अलावा किसी भी सिद्धान्त का प्रतिपादन मैंने अकस्मात् नहीं किया। मेरे सब सिद्धान्त, खास कर गति के तीन नियम, तरंगों की गति का विश्लेषण और कैलकुलस (Calculus) का अविष्कार मेरे निरन्तर प्रयत्नों, प्रयासों और विभिन्न प्रयोगों के निष्कर्षो से है। पहले मैं समझ लेता हूँ, फिर सारा ध्यान छोड़ कर उसके पीछे पड़ जाता हूँ। जिस चीज को मैं शुरू करता हूँ, वह सदा मेरे मस्तिष्क में रहती है। अच्छे अध्ययन और सिद्धान्तों को प्रूफ (Proof) के लिए विभिन्न प्रयोगों की ही जरूरत पड़ती है। विद्यार्थियों के अध्ययन करने में भी यह इतना ही सही है। इसका उलटा ही शून्य प्रतिशत परिणाम देता है।

संवाददाता को सारी बातें समझ में आ गई थीं। उसने अपने पुत्र को अध्ययन में प्रयोगों की सलाह दी, जिससे बच्चे ने जीवन में भारी सफलता प्राप्त की।

आप ऐसे टीनएजर्स से मिलते रहते ही होंगे जो अपना विद्यार्थी–जीवन बेमकसद गुजार रहे हैं। ऐसे विद्यार्थी किस्मत और आखिरी दिनों के अध्ययन से जो भी अंक मिलते हैं, उसे ही कबूल कर लेते हैं। चंद युवा ही ऐसे होते हैं जिन्हें कामयाबी एक अच्छे मार्गदर्शक के कारण या अपने तजुर्बे के कारण मिल

जाती है, पर ज्यादातर युवा तो नाखुशी, हताशा और मटरगस्ती में ही अपनी अहम् जवानी गुजार देते हैं। हालाँकि हर युवा का अपने तरीके से जिन्दगी गुजारने का अधिकार है, परन्तु असफल होकर नहीं।

एक तरह से देखा जाए तो 80/100 प्रतिशत मार्क्स का रहस्य एक निर्माण पुस्तक है, जो उच्चतम अंकों के प्राप्त करने के गुण और रहस्य के औजारों के बारे में खुलासा करती है। यह अंकों के रहस्य का खुलासा आगे आने वाली जिन्दगी को खुशहाल और मजबूत नींव का नक्शा तैयार में भी सहायता करता है। यह किताब हर कदम पर विद्यार्थी के लिए कामयाबी का सपना देखने से लेकर उन 80/100 मार्क्स के सपनों को सच करने तक के आसान रास्ते ही नहीं बतलाती, बल्कि मंजिल के आखरी पड़ाव तक भी पहुँचाती है। यह किताब उन युवाओं के लिए कतई नहीं है, जिनमें 80/100 मार्क्स हासिल करने के लिए न तो कोई जुनून है, न पक्का इरादा होता है, न ही पढ़ने के लिए वक्त देते हैं, और न ही 80/100 मार्क्स पाने की कोई कोशिश ही करते हैं। सीधी और सरल–सी बात तो यही है कि यदि आप अपने विद्यार्थी–जीवन को और भी बेहतर और खुशहाल बनाने के अध्ययन के सही तरीके और तजुर्बे की जानकारियाँ लेकर स्वयं के जीवन में उतारने की कोशिश कर रहे हैं, तो असली मकसद को पाया जा सकता है।

गिद्धों की कोचिंग संस्थान

शहर में गिद्ध कई दिन से भूख से बदहाल थे। कहीं कोई लावारिस लाश नहीं। काफी खोजबीन के बाद भी भोजन का जुगाड़ न होने पर गिद्धों की सभा हुई। सब युक्ति लगाने लगे। आखिरकार गिद्धों के मुखिया ने ही समाधान निकाला।

शहर से वापिस आकर जंगल में गिद्धों ने एक कोचिंग सेन्टर खोल लिया। बड़े–बड़े साइन बोर्ड लगा दिए, लम्बी–चौड़ी बातें उन पर लिख दी थीं। सारे गुर वे शहर से सीख कर आए थे। कोचिंग का विज्ञापन बहुत लुभावना था। हर जानवर अपने बच्चों को उसमें भर्ती कराना चाहता था। कोचिंग सेन्टर का नाम दूर–दूर तक मशहूर हो गया। यहाँ तक कि दूसरे वनों के जानवर भी उसमें एडमिशन के लिए आने लगे। अब तो कोचिंग में एडमिशन का मतलब अच्छे

नम्बरों से उत्तीर्ण/इंजीनियरिंग और मेडिकलन कालेज में गारंटी के साथ दाखिला।

कुछ दिनों तक सब ठीक–ठाक चलता रहा, लेकिन फिर कोचिंग सेन्टर में अफरातफरी मच गई। लम्बी–चौड़ी फीस के अलावा दो–चार जानवरों को छोड़ कर, जो अध्ययन में पहले से ही प्रथम रेंक के जानवर थे—बाकी सब असफल। कोचिंग सेन्टर हॉस्टल वाला था। ये बातें कुछ दिन तक दबी रहीं, लेकिन बात आखिर में छिप नहीं सकी। कुछ जानवरों को गिद्धों ने अपना ताजा भोजन बनाना शुरू कर दिया। जानवरों के माँ–बाप को मालूम पड़ा तो कोचिंग सेन्टर की और दौड़े, परन्तु तब तक कोचिंग सेन्टर को बन्दरों के हाथों बेच दिया गया था। अब बन्दर उस कोचिंग सेन्टर के नए व्यवस्थापक थे। गिद्धों ने खूब धन कमाया और ताजा जानवरों का भोजन। अब वो पहले की तरह लावारिश लाश का इंतजार नहीं करते।

रोजगार की घटती संभावनाओं के बीच निश्चित सफलता का वादा करने वाले कोचिंग संस्थान यूँ तो भारत के हर कस्बे में खुल गए हैं, लेकिन जिस संस्थान की साख अच्छी है, उसमें प्रवेश के लिए प्री–टेस्ट और मुँहमाँगी फीस देकर भी विद्यार्थी प्रवेश के लिए लालायित रहते हैं। दरअसल कोचिंग संस्थानों ने एक ऐसे लघु उद्योग का स्वरूप धारण कर लिया है जहाँ किसी भी धन्धे से ज्यादा धोखाधड़ी है। कुछ कोचिंग संस्थान अध्यापकों के नाम से अपने छात्रों को सम्मोहित कर रहे हैं तो कई कोचिंग संस्थानों ने अपने–अपने एजेन्ट बना रखें हैं जिन्हें कमीशन मिलता है। बिना कोचिंग संस्थान की मदद से पास हुए छात्र–छात्राओं के नाम इसलिए छपा दिये जाते हैं कि रातोंरात उनके घरों में जाकर उसी संस्थान का फार्म भरवा लिया जाता है—बदले में उनको मोटी रकम थमा देते हैं। हकीकत में कुल छात्रों के सफल होने का प्रतिशत देखें तो एक कोचिंग संस्थान का 0.01 प्रतिशत से ज्यादा नहीं आयेगा, जिसमें आधे वे छात्र–छात्रा होंगे जो दूसरी बार परीक्षाओं में बैठेंगे तथा उन छात्र–छात्राओं को ही प्रवेश देंगे जिनका कि सी.बी.एस.सी. या समकक्ष परीक्षाओं में पहले से ही 80/100 मार्क्स से ज्यादा हो। यानी ऐसे विद्यार्थी, जो पहले से ही अत्यधिक होंशियार और लायक होते हैं। उन्हें दूसरी बार परीक्षा देने में भी दो अनिवार्य विषय, अंग्रेजी और हिन्दी की तो तैयारी नहीं

करनी पड़ती। यानी सारा समय सिर्फ तीन विषयों की तैयारी पर खर्च करते हैं। किसी भी संस्थान को हम उद्योग इसलिए कह सकते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि उस संस्थान की कोई खास अहमियत या कीमत नहीं है। सारा कुछ तो विद्यार्थी पर ही निर्भर करता है, क्योंकि रेत को निचोड़ कर उसमें से तेल नहीं निकाला जा सकता है। सिर्फ अच्छे मार्गदर्शक की राय ही विशेष राय और अध्ययन होता है।

अच्छी पढ़ाई और शिक्षा जिन्दगी की शुरुआत है। विद्यार्थी जितना अच्छा पढ़ता है, उतना ही अच्छा महसूस करता है और वह जितना ही अच्छा महसूस करता है, उतनी ही मेहनत अच्छी करता है। मेहनत और मजबूत इरादों के बगैर श्रेष्ठ प्रतिभा (Talent) भी बेकार है। श्रेष्ठता सिर्फ किस्मत (Luck) की बात नहीं है, यह एक विश्वास की बात है जो मेहनत, प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल से मिलती है। आवश्यकता नहीं है कि हम भी दूसरे युवाओं की तरह लीक पर ही चलें। हमें खुले मन से नया मार्ग प्रशस्त करना चाहिए, तभी हम 80/100 मार्क्स के लक्ष्य का दोहन कर सकेंगे, उसको विकसित कर सकेंगे। आज युवा जो कुछ भी कर रहे हैं, अपने भविष्य–निर्माण के लिए कर रहे हैं। आप सोच सकते हैं कि 80/100 मार्क्स वाले विद्यार्थी का भविष्य कितना सुनहरा होगा?

श्रेष्ठ अंकों के लिए कोई जादुई छड़ी नहीं होती। वास्तविक विद्यार्थी की दुनिया में अच्छे मार्क्स सिर्फ अच्छे तरीके से पढ़ाई करने वालों को ही मिलते हैं, तमाशबीनों को नहीं। साथ ही नियमित पढ़ाई के बिना 80/100 प्रतिशत मार्क्स की कामयाबी नहीं मिल सकती। पक्षियों को खान–पान के लिए उड़ने की और खाना तलाशने की मेहनत तो करनी पड़ती है, घोंसलों में तो खाना अपने–आप आ नहीं सकता। आसानी से तो कुछ भी नहीं मिलता। मुश्किल हालत में कुछ विद्यार्थी अपने अंकों का रिकार्ड तोड़ते हैं, परन्तु ज्यादातर विद्यार्थी समय की बरबादी में खुद को तोड़ बैठते हैं। हीरे की चमक तभी आती है जब प्रिज्म (Prism) बनाने के तरीके से उसकी धार बनाए, ना कि उल्टी–सीधी घिसाई कर दे। ठीक उसी तरह अध्ययन का तरीका सीधा होना चाहिए, उलटा नहीं। हथौड़े की चोट भले ही शीशे को तोड़ दे, लेकिन खिड़कियों के काच काटने के लिए तो उसे डायमण्ड कटर (Diamond Cutter) की ही आवश्यकता होगी, जिसमें चोट की कोई अहमियत नहीं होती। गलत चोट से शीशा नहीं तोड़ना, बल्कि काबिलीयत से खिड़की के काच को बनाना है। हर

काम और अध्ययन को ज्यादा मूल्यवान बनाने की सोचें। अच्छा अध्ययन और बेहतर अंकों का पाना आजकल आसान बन गया है। विद्यार्थी के पास गिर कर उठने की और दृढ़ इच्छा के साथ नई पढ़ाई–लिखाई की योग्यता होनी चाहिए। आखिरी बात, युवाओं का अध्ययन इस बात पर निर्भर नहीं है कि वे कितने ज्यादा ट्यूशन करते हैं और पढ़ाई–लिखाई में कितना समय खर्च करते हैं, बल्कि इस बात पर निर्भर है कि उन्हें कितना याद रहता है और परीक्षा में उसका नतीजा क्या दर्शाता है? रट कर एक बार परीक्षा पास की जा सकती है—परन्तु हर बार नहीं।

80/100 मार्क्स के लिए : पाँचवाँ कदम
Fifth Step : Towards 80/100 Marks

अपने अंकों पर गर्व करें Pride of Your Marks

आज की दुनिया में गर्व से अध्ययन करना विद्यार्थी बिल्कुल भूल चुके हैं, क्योंकि इसके लिए कोशिश और लगातार अध्ययन की जरूरत होती है। जब कोई युवा पढ़ाई में निराश हो जाता है तब वह आसान रास्ते ढूँढ़ने की कोशिश करता है। मगर ऐसा करने से हर हाल में बचना चाहिए। प्राप्त अंकों पर गर्व करने की भावना आती है तब ही आगे और अच्छे अंक प्राप्त करने भावना जाग्रत होती है। अच्छे अंकों पर गर्व करना कोई अहंकार नहीं दिखाता, बल्कि खुशी और टेलेण्ट को दिखाता है। अध्ययन की श्रेष्ठता और अध्ययन करने वाले विद्यार्थी की श्रेष्ठता को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। श्रेष्ठता का नतीजा, श्रेष्ठ अध्ययन से मिलता है और बेहतरी तभी आती है जब अध्ययन करने वाला विद्यार्थी बेहतर अंक प्राप्त करके गर्व महसूस करता हो।

परन्तु युवाओं और बच्चों के ललाट पर उभरी हुयी रेखाएँ—माँ–बाप को चेतावनी देती हैं, सम्भल जाओ, अभी भी समय है। बच्चों के ज्यादा ट्यूशन और 10–12 घण्टों के अध्ययन से परीक्षाफल बिगड़ने के अलावा बच्चे के भाग्य में कुछ भी नहीं बचेगा, इसलिए सही ज्ञान, अध्ययन और नए तरीकों का रास्ता दिखाओ। यह समय आपके ढुलमुल रवैया अपनाने का नहीं है।

थामस अल्वा एडीसन की प्रयोगशाला

थामस अल्वा एडीसन को विज्ञान के इतिहास में सर्वाधिक आविष्कार करने का विरल श्रेय प्राप्त है। टेलीग्राफ मशीन, ग्रामोफोन, बिजली के

बल्ब, विद्युत फेन, चलचित्र कैमरे के आविष्कारक एडीसन का जन्म मिलान, ओहियो में हुआ था। वे दस साल के थे कि घर के तहखाने में प्रयोगशाला बना ली थी। सन् 1862 में जब उन्होंने स्टेशन मास्टर के बेटे को जान हथेली पर रख कर, एक बड़े हादसे से बचाया तो स्टेशन मास्टर ने पूछा, मि. एडीसन क्या तुम्हें पक्का विश्वास है कि प्रयोगशाला में विभिन्न प्रयोगों के कारण ही तुम्हारा दिमाग इतना अधिक विकसित हुआ है ?

एडीसन ने जवाब दिया, निश्चित ही ऐसा हुआ है।

स्टेशन मास्टर ने फिर दोबारा पूछा, इसका सबूत क्या है ?

एडीसन बोले, क्या मेरे एक हजार से भी अधिक पेटेण्ट मेरे नाम से रजिस्टर्ड मेरे मस्तिष्क के विकसित होने का सबूत नहीं हैं?

स्टेशन मास्टर को अपने सवाल का जवाब मिल गया था। उसने भी अपने बेटे के लिए एक प्रयोगशाला बना दी जिसमें आगे मि. एडीसन के कामों में उसका बेटा, पूर्ण सहयोग देता रहा। इस महान् और धुरंधर वैज्ञानिक का देहान्त 18 अक्टूबर 1931, को न्यूजर्सी में हुआ।

अध्ययन की विफलता के अंधेरे से बाहर निकलने के लिए विद्यार्थी अपनी प्रयोगशाला घर में ही शुरू कर दें तो उसके चारों ओर निराशा का धुआँ गुबार बन कर फैला होता है—उसको वो आसानी से हटा सकता है और हर विषय के अध्ययन की तस्वीर साफ नजर आने लगती है। यह देख कर बेहद अफसोस होता है कि आज युवा तरक्की की दौड़ में, अध्ययन में क्यों पिछड़ गया है! अध्ययन में पिछड़ने के बाद उसका बाकी का जीवन रुके हुए पानी की तरह हो जाता है जिसके पास एक क्षण के लिए भी खड़ा रहना दूभर हो जाता है। अध्ययन में प्रयोग और समर्पण एक ऐसी कला है जो प्रत्येक कार्य में निखार ला देती है—भले ही अध्ययन ही क्यों न हो?

अपनी कथनी को करनी में न बदलने वाला इनसान
घास-फूस से भरी फुलवारी है।

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

80/100 मार्क्स के लिए : छठा कदम
Sixth Step : Towards 80/100 Marks

अच्छे मार्क्स में कमी का मतलब लगातार अध्ययन की कमी
Lack of Good Marks means lack of regular study

जब अच्छे अंकों का पाना नामुमकिन लगने लगता है तो परीक्षा से भागना सबसे आसान तरीका नजर आता है। अक्लमन्द युवा चोट भले ही खा जाए परन्तु मैदान नहीं छोड़ता। औसतन विद्यार्थी को कम नम्बरों का सामना करना पड़ता है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि उसमें कोई प्रतिभा की कमी हो। ज्यादातर युवा परीक्षा और परीक्षा की तैयारी की कमी से नहीं, बल्कि फेल होने के डर से ही मैदान छोड़ देते हैं। ज्यादा नम्बरों का रहस्य दो बातों में छिपा है—लगातार अध्ययन और ठोस अध्ययन। कोई बच्चा इसलिए श्रेष्ठ नहीं है कि वह किसी और से ज्यादा अंक लाया है, बल्कि इसलिए है कि वह अपना अध्ययन किसी दूसरे की तुलना में ज्यादा अच्छे तरीके से करता है। अच्छे अंकों की प्राप्ति को हम न्यूटन के गति के तीसरे नियम से जाँचें तो हर क्रिया के लिए समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है (When there is an action, there is a equal & opposite reaction.)। सीधे शब्दों में अच्छे अंकों के लिए अच्छी और साफ–सुथरी पढ़ाई करनी होगी। ध्यान रहे कि यही बात हमारी जिन्दगी में भी खरी उतरती है। आज के कोचिंग संस्थान द्वारा अध्यापन और शिक्षण इस बात के साक्षी हैं कि उनके अध्यापन का तरीका सार्थक नहीं हो पाया है। उसमें एक ऐसी कमी है जो खटकती है और वो है बड़े–बड़े विज्ञापनों के जरिए युवाओं को गुमराह करने की।

अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल–जिन्होंने दुनिया बदल दी

अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल ने डायनमाइट नामक विस्फोटक का अविष्कार ही नहीं किया, वरन् 90 लाख डालर की राशि के साथ पाँच संकायों में महत्त्वपूर्ण और उत्कृष्ट योगदान देने वाले इनसान को प्रतिवर्ष अवार्ड देने की वसीयत लिख कर नई महान् परम्परा का सूत्रपात किया, जिसे आज नोबेल पुरस्कार के नाम से जाना जाता है। स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम में 21 अक्टूबर, 1833 को जन्मे अल्फ्रेड नोबेल के अपने विस्फोटक निर्माण में ऐसा भयंकर

विस्फोट हुआ कि उनके छोटे भाई समेत पाँच व्यक्तियों की मौत हो गई और उसका वर्कशॉप भी पूरी तरह से नष्ट हो गया। 90 लाख डालर रकम की वसीयत के ब्याज से हर साल भौतिकी, रसायन, साहित्य, चिकित्सा और शान्ति में योगदान देने वाले को पुरस्कार दिया जाता है। बाद में इसके साथ अर्थशास्त्र को जोड़ दिया गया। 10 दिसम्बर, 1896 को देहान्त से पहले उन्होंने अपने नाम के सौ से ज्यादा पेटेण्ट करवाए। पेरिस में एक साल कैमिस्ट्री का अध्ययन करने के बाद अमेरिका में चार साल उच्च अध्ययन भी किया था।

तैयारी में विफलता का मतलब है, विफल होने की तैयारी।

80/100 मार्क्स के लिए : सातवाँ कदम
Seventh Step : Towards 80/100 Marks

अच्छे मार्क्स की योजना और तैयारी
Preparation for planning of good Marks

अंकों और इम्तिहान की योजना की तैयारी करने से आत्मविश्वास पैदा होता है। प्लानिंग, प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल के अलावा अध्ययन में मानसिक रूप से एक पूरी तैयारी–आत्मविश्वास का ही नतीजा होता है, जो अधिकतम अंक प्राप्त करने में मददगार होता है। अच्छे अंक प्राप्त करने की इच्छा सभी युवाओं में होती है, मगर अच्छे अंकों के लिए अच्छी तैयारी करने की इच्छा बहुत कम युवाओं में होती है। दुख की बात है, लेकिन सच यही है कि ज्यादातर टीनएजर पार्टी, मूवी देखने, सप्तान्त छुट्टी बिताने की प्लानिंग में ज्यादा समय लगाते हैं, बजाए अपनी परीक्षा और परिणाम की प्लानिंग, तैयारी और अध्ययन के। अगर हमारी प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल में कमी है तो हमारी प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल की तैयारी होगी वैसा ही हम अंक प्राप्त करते हैं।

पूर्ण तैयारी और अध्ययन न होने पर परीक्षा का तनाव और दबाव, दोनों बढ़ जाते हैं। तैयारी, प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल और मेहनत की जगह दूसरा कोई और नहीं ले सकता। सिर्फ सपनों और खयाली पुलाव से काम नहीं चलता। अच्छी तैयारी ही आपको अच्छे नम्बरों का रास्ता दिखलाएगी। परन्तु पूर्ण

तैयारी न होने पर पढ़ाई का दबाव किसी विद्यार्थी को हताश कर सकता है। जिस तरह पानी अपना रास्ता बना लेता है, वैसे ही अंकों की सफलता उन युवाओं के पास पहुँच जाती है जिन नवयुवकों ने अच्छी तैयारी और पढ़ाई कर रखी हो। कमजोर अध्ययन और कोशिश कमजोर नतीजे ही दिलाती है। कम अंक पाने वालों के पास अध्ययन न कर पाने के लम्बे–चौड़े बहाने होते हैं। किस्मत खराब के बहाने के अलावा अपने को कम होशियार होने का प्रमाण–पत्र देना और समय की कमी के लिए झूठे बहाने बनाना। इन बहानों का तो कोई अन्त नहीं है। जो जैसा सोचता है, करता है, वो वैसा ही बन जाता है। ऐसे युवा कोरे 80/100 मार्क्स की कल्पना ही करते रह जाते हैं, अध्ययन आरम्भ करते ही नहीं।

जिस तरह आतिशबाजी बनाने के लिए पोटेशियम नाइट्रेट, सल्फर, कोयले का मिश्रण प्रयोग किया जाता है, लेकिन यदि इस मिश्रण में स्ट्राशियम और बेरियम नामक धातुओं के लवण को मिला दिया जाये तो आतिशबाजी में से निकलने वाला प्रकाश रंग–बिरंगा हो जाता है। अध्ययन को रंग–बिरंगा बनाने के लिए प्रैक्टिस, प्रैक्टिकल और योजना का मिश्रण 80/100 मार्क्स का प्रकाश देगा। स्ट्राशियम सल्फेट से आसमानी रंग, स्ट्राशियम कार्बोनेट से पीला रंग मिलता है। आजकल हर तरह की आतिशबाजी में अलग–अलग लवण का प्रयोग किया जाता है। आप भी अध्ययन में अलग–अलग प्रयोग (Practical) करके नए रंगों की आतिशबाजी का रंग–बिरंगा प्रदर्शन करें।

कम नम्बर पाने वाले सोचते हैं कि जिन्दगी ने उनके साथ नाइंसाफी की है। वे सिर्फ अपनी दिखावटी अड़चनों के बारे में सोचते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि वह युवा, जिसने पूरी तैयारी की और अच्छा अध्ययन किया, उसे भी इतनी ही अड़चनें मिली हैं, लेकिन वह अपनी अक्लमन्दी से उबर गया है। यही एक फर्क है जो 80/100 मार्क्स पाने वालों में हमेशा पाया जाता है। कमजोर युवा भाग्य में विश्वास करते हैं। अक्लमन्द और पक्के इरादों वाले युवा कारण, कार्य और उसके नतीजों में भरोसा करते हैं। ऐसे युवा निश्चित रूप से सफल होते हैं, क्योंकि ये अपने काम और अध्ययन को समर्पण और दृढ़ता से करते हैं। इनमें हिम्मत, विश्वास और प्रेरणा की कमी नहीं होती। सब मिला कर प्रश्न केवल सैद्धान्तिक प्रेरणा का नहीं, केवल अध्ययन, समर्पण का नहीं, केवल दृढ़ हिम्मत और विश्वास का नहीं, वरन् युवाओं का नई अध्ययन पद्धति से परिवर्तन के साथ नियमित तीन घण्टे के अध्ययन के

साथ फिर से कसौटी पर चढ़ना है। उन्हें सिद्ध करना है कि किताबों को रट लेने में या घोट-घोट कर पी लेने से 80/100 मार्क्स नहीं आते।

सिर्फ भाग्य पर भरोसे से बचने का एक ही तरीका है कि हम अपने अध्ययन की जिम्मेदारी स्वीकारें और वजह व असर (Causes & Effects) के नियमों पर भरोसा कर सिर्फ अध्ययन में जुट जावें, न कि भाग्य पर। विद्यार्थी-जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए इम्तिहान की प्रतीक्षा अजूबे का इंतजार या नियमित अध्ययन न करने की बजाए, सही अध्ययन की ओर कदम, तैयारी और योजना बना कर योजना को क्रियान्वित करने की जरूरत है। किस्मत तभी साथ देती है जब पूरी तैयारी और अध्ययन, दोनों मिलते हैं। पूरी तैयारी और अध्ययन के बिना किस्मत का संयोग नहीं बनता। दूध, चावल और चीनी को मिलाने पर खीर नहीं बन जाती। अच्छी खीर बनाने के लिए सही मात्रा में चीनी के साथ इसे न तो आप जरूरत से ज्यादा पका सकते हैं और न ही कच्चा रख सकते हैं। एक बार आप सही मिश्रण की रेसिपी सीख लें तो प्रैक्टिस, प्रैक्टिकल से यह काम बहुत आसान हो जाएगा। खीर की रेसिपी आपके हाथ में है और इसे इस्तेमाल करना, सही तरीके से अध्ययन करना आपकी मर्जी पर निर्भर करता है। हालिया शोध से यह बात साफ हो गई है कि हर युवा के अधिकतम अंकों का विचार जो उसके दिमाग में आता है, उसका सीधा असर शरीर की बायोकैमिस्ट्री पर पड़ता है। यह वह प्रणाली है जो रसायनों द्वारा संदेश भेजकर शरीर और दिमाग को 80/100 मार्क्स के लिए नियंत्रण में करती है। सकारात्मक प्रवृत्ति और अधिक अंकों की विचारणा ही 80/100 मार्क्स के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चील को मांस का टुकड़ा क्यों छोड़ना पड़ा?
Why the Eagle has to leave the piece of flesh

एक चील मांस का ताजा व बड़ा टुकड़ा मुँह में लिए आकाश में उड़ी थी कि कुछ कौए अपने एक लीडर के साथ उसके पीछे लग गए। वह तेजी से ऊपर उड़ने लगी, सोच रही थी, कहीं किसी पेड़ की डाल पर बैठ कर चैन से खाऊँगी, परन्तु वह जहाँ उड़ती, जितना उड़ती, उसके पीछे कौए भी काँव-काँव करते झपटने को आतुर थे। शक्तिशाली चील उड़ते-उड़ते निढ़ाल हो गई, न कहीं बैठने की

जगह मिली, न कौओं से छुटकारा। हार कर उसने मुँह में दबा मांस का टुकड़ा छोड़ दिया। टुकड़े के जमीन की ओर जाते ही सभी कौए चील का पीछा छोड़ कर मांस के टुकड़े के लिए नीचे उतर गए और आपस में बाँटकर खाने लगे। कौए के झुंड ने अपने शिक्षित सरदार से पूछा, आखिर शक्तिशाली चील ने मांस का टुकड़ा किस कारण से और क्यों छोड़ दिया? कौओं के सरदार ने कहा, नौजवान कौओ, अध्ययन के समय मैंने सीखा कि किसी विषय में कमजोर होना सिर्फ और सिर्फ इस बात पर निर्भर होता है कि आपने सच्चे दिल से पूर्ण शक्ति के साथ इस बारे में प्रयास नहीं किए। यदि पूर्ण शक्ति के साथ, उस शक्तिशाली और कठिन विषय पर चारों ओर से धावा बोल दें तो सभी मुश्किलें आसान होती दिखती हैं। अधिक समय देकर, ज्यादा अभ्यास करने पर कमजोर विषय में प्रवीणता (Expertness) हासिल कर सकते हैं। चील जैसे शक्तिशाली पक्षी पर हम सब लोगों ने चारों ओर से हमला बोल कर, उसे कमजोर कर दिया, मजबूरन उसे मांस का टुकड़ा छोड़ना पड़ा।

सभी कौए–चोंच और आँखें टेढ़ी कर–सरदार की तरफ देखने लगे।

यानी युवाओं के लिए ऐसा कुछ नहीं है कि कमजोर विषयों में सफल न हों या अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर सकते। जो युवा कम अंक प्राप्त करते हैं उसके पीछे कारण यह है कि उससे सम्बन्धित अभ्यास, परिश्रम, प्रैक्टिकल थोड़ा अधिक मात्रा में नहीं किया गया था। लेकिन युवा निरन्तर सच्चे अभ्यास और मेहनत से औरों के बराबर आ सकते हैं।

परन्तु अगर कोई अभ्यास या मेहनत ही नहीं करे तो अक्ल महँगे भाव कैसे बिकेगी?

अक्ल और उसका मोल Price of Wisdom

तीन दोस्त आपस में बातें कर रहे थे।

जोन—अगर कोई मेरी अक्ल का मोल लगाए तो मैं 3000 डालर में बेचूँगा।

डेविड—लेकिन मैं तो दस हजार डालर में बेचूँगा।

क्लार्क नामक तीसरे दोस्त ने पूछा, मि. डेविड, तुम्हारी अक्ल जोन से महँगी क्यों, जबकि तुम हमेशा फेल हो रहे हो?

डेविड—फेल होने का सबूत ही है कि मेरी अक्ल का मोल महँगा है? दोस्त क्लार्क, जरा समझो, मेरी अक्ल, मि. जोन से ज्यादा ताजा और कम घिसी–पिटी होने के कारण ही ऐसा है। मैं अक्ल को इस्तेमाल ही नहीं करता।

मि. जोन और मि. क्लार्क, मि. डेविड का चेहरा देखते रह गए।

80/100 मार्क्स के लिए : आठवाँ कदम
Eighth Step : Towards 80/100 Marks

अध्ययन में प्रेरणा कैसे काम करती है?
In Study - How Motivation does work?

जब युवा एक बार अपने उसूल समझ लेता है तो प्रेरणा उसमें दृढ़ विश्वास जगाती है और उसके खयालों की गाड़ी को काम करने के लिए आगे बढ़ाती है। 80/100 मार्क्स के उद्देश्य, प्रेरणा एक ऐसी ताकत है जो वास्तव में आपकी जिन्दगी बदल सकती है। दूसरे लफ्जों में कहा जा सकता है कि अच्छे अंकों की प्रेरणा आपकी भावना को कार्यरूप देती है जो आपके अन्दर की संतुष्टि ही है। जहाँ प्रेरणा को पहचानना जरूरी है, वहीं अधिकतम अंकों की प्राप्ति के लिए उसे मजबूत रखना भी जरूरी है। अपने 80/100 मार्क्स के लक्ष्य को अपने सामने रखें और रोजाना याद करें। प्रेरणा के लिए दो सबसे जरूरी बातें हैं, एक मान्यता और दूसरी जिम्मेदारी। जिम्मेदारी युवाओं को उत्तरदायित्व का एहसास दिलाती है, जिससे वह खुद को अच्छे अंक पाने का जरूरी हिस्सा समझने लगता है और बस, उतना ही अध्ययन करता है जितना उसे परीक्षा में सिर्फ 80/100 मार्क्स की गारंटी दिला दे। हमारा मकसद ऐसे युवाओं को ऐसी पुस्तक के जरिए प्रेरित और प्रभावशाली अध्ययन में जुटा देने का ही है। यहाँ सवाल यह नहीं है कि दृढ़ विश्वास और प्रेरणा से 80/100 मार्क्स मिलेंगे या नहीं; ना ही यहाँ यह सवाल है कि बादल अगर हैं तो पानी बरसेगा या नहीं। बादल अगर हैं तो आज नहीं तो कल जरूर बरसेंगे। परन्तु अध्ययन का तरीका सही है तो निश्चित ही 80/100 मार्क्स के बादल आप पर जरूर बरसेंगे। मंजिल चाहे जितनी दूर हो, परिश्रमी युवा उसे प्राप्त करके ही चैन लेता है।

युवाओं में प्रेरणा हमेशा उत्साह से पैदा होती है और उत्साह तब तक नहीं आता जब तक अध्ययन के प्रति पूरा कमिटेड न हो। युवा कमिटेड तभी हो सकता है जब अध्ययन के नए तरीके उसके मन में अंकों की असंतुष्टि पैदा कर दें। हमारा असली मकसद युवाओं को अपने–आप, खुद–ब–खुद प्रेरित करना है, क्योंकि युवा अपना अध्ययन अपनी वजह और विश्वास से ही करते हैं, न कि दूसरों की वजह से, तो वही उसके लिए सच्ची प्रेरणा है। याद रखें कि अच्छे अंकों के पाने का विश्वास ही सबसे बड़ी प्रेरणा होती है। हमें युवाओं को खुद में यह विश्वास जगाना है कि अपने अध्ययन और व्यवहार के लिए वे स्वयं जिम्मेदार हैं—कोई दूसरा नहीं है। जब युवा अपनी जिम्मेदारी कबूल करते हैं तो आप ही आप उनके अध्ययन में सुधार आ जाता है। प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव नजर आता है।

युवाओं को प्रेरित करने के कुछ कदम —

(1) अच्छे अंकों को मान्यता और सम्मान देना।
(2) अध्ययन को रुचिकर बनाने के अच्छे सुझाव देना।
(3) दूसरे युवाओं की अध्ययन सम्बन्धी बातें ध्यान से सुनना।
(4) दूसरे युवाओं को ज्यादा अंक प्राप्ति की चुनौतियाँ देवें। यह प्रेरणा का स्रोत हैं।
(5) अध्ययन में दूसरों की मदद लेवें।

परन्तु सदैव दूसरे युवाओं से एक कदम आगे सोचने और प्रैक्टिकल करने का प्रयास करें—पर यह आप तभी कर सकेंगे जब आप जान जायेंगे कि औरों के अध्ययन, सोच और अंकों की हद (Limit) क्या है? सदैव दूसरों से एक कदम पहले उठाएँ।

80/100 मार्क्स के लिए : नौवाँ कदम
Ninth Step : Towards 80/100 Marks

क्या स्वाभिमान और अध्ययन का कोई सीधा सम्बन्ध है?
Is there any relation between Study and Self-esteem?

हाँ, ऊँचे स्वाभिमान वाले युवाओं में स्वाभिमान और अध्ययन का सीधा सम्बन्ध है क्योंकि स्वाभिमान का आसान–सा मतलब है ऊँचा आत्मविश्वास और भारी

दृढ़ता की काबिलीयत। अध्ययन से इन दोनों बातों का सम्बन्ध बहुत गहरा होता है। जब तक आप स्वयं को अहम नहीं समझेंगे तब तक आप में एक ऊँचा स्वाभिमान नहीं आ सकता। खुद के बारे में हमारा नजरिया, अध्ययन को लेकर हमारी भूमिका, जिन्दगी में अच्छे अंक पाने की चाह आदि इस पर पूरा असर डालते हैं। इन सबसे जिम्मेदारियों को कबूल करने की इच्छा जो बढ़ती है। ऐसे युवा ज्यादा संवेदनशील (Senstitive) और महत्त्वाकांक्षी (Ambitious) होते हैं। उनकी अध्ययन करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। वे अच्छे अंकों की प्राप्ति के लिए कोई अवसर नहीं छोड़ते और साथियों से अधिक अंक प्राप्त करने की चुनौतियाँ स्वीकार करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं। इसका उलटा भी उतना ही सही है।

हरेक परीक्षा के बाद अगर आपने 80/100 अंकों का लक्ष्य हासिल कर लिया तो उसके बाद अध्ययन में आत्मविश्वास बढ़ जाता है जिससे अगली बार परीक्षा में 80/100 मार्क्स का लक्ष्य और भी आसान हो जाता है और उसकी सीमा को बढ़ाने की कोशिश स्वाभाविक है। इसी वजह से कोई अक्लमन्द युवा अपनी शुरुआत आसान विषय के अध्ययन से शुरू करता है जिससे उसके विश्वास और स्वाभिमान का स्तर बढ़ता जाता है। इसके साथ माता–पिता अगर अच्छा प्रोत्साहन जोड़ दें तो यह अच्छे स्वाभिमान का रूप लेना शुरू कर देता है, जिससे उसका लक्ष्य 80/100 अंकों से ऊँचा बढ़ जाता है। बच्चों को कम अंकों की जंजीर और जाल से निकालकर 80/100 मार्क्स के क्रम में शामिल करना उनके माँ–बाप की जिम्मेदारी है, परन्तु सरल और साधारण तरीकों से रात–भर या अधिक घंटों की पढ़ाई इसका उचित परिणाम नहीं देती।

नदी और नाव

इटली के बोलाना शहर के रहने वाले दो भाई गुग्लोयो मारकोनी और जूनियर मारकोनी एक नदी को पार करने के लिए अपने शिक्षक के साथ नाव में बैठे तो उनकी माता ने उस शिक्षक से पूछा, शिक्षक महोदय, आप किस विश्वास से कह सकते हैं कि दोनों भाइयों में मि. गुग्लोयो मारकोनी ज्यादा होशियार और अक्लमन्द है जबकि दोनों भाइयों ने आपके अधीन ही शिक्षा पाई और दोनों की रेंक प्रथम इसलिए थी कि उनके अंक भी समान थे?

शिक्षक महोदय जैसे ही जबाब देने वाले थे कि मि. गुग्लोयो मारकोनी जोर से चिल्लाया, यह नाव डूब जायेगी, हम सब गहरी नदी में डूब जायेंगे, हमें नहीं जाना, यह कह कर अपनी माँ, भाई और शिक्षक को नाव से उतार तुरन्त ही किनारे ले आया। चप्पू चलाने वाला नाविक भी हैरान हो गया और सवार लोग भी घबरा गए। सबने एक स्वर में चिल्ला कर पूछा, क्या तुम कोई नजूमी या ज्योतिषी हो, जो ऐसी बात कर रहे हो?

गुग्लोयो मारकोनी बोला, न तो मैं कोई ज्योतिषी हूँ और न ही कोई भविष्यवक्ता, पर मेरा 'सामान्य ज्ञान' है। उसकी बात सुन कर सभी हँसने लगे और नाव नदी की तरफ चल पड़ी थी। पर थोड़ी देर में सचमुच हुआ ऐसा ही। नाव डूब गई।

लोग बचते किनारे आ गए। सब चक्कर में थे। सबने उससे कहा, मि. गुग्लोयो मारकोनी, हमें पूरी बात विस्तार से बताओ।

मि. गुग्लोयो मारकोनी बोला, देखो नाव की स्थिति क्या थी? एक तरफ सारी भीड़ बैठी थी। दूसरी तरफ एक व्यापारी अपने ऊँट को लेकर बैठा था। उसकी बगल में मदारी और दो बन्दर रस्सी से बंधे बैठे थे। जितने प्राणी और इंसान हैं—सब अपने स्वभाव से बंधे होते हैं। बन्दर कभी भी बाज नहीं आएगा और ऊँट के कूबड़ से छेड़छाड़ करेगा। उसकी इस हरकत को कुछ देर के लिए ऊँट बर्दाश्त तो करेगा, परन्तु बाद में गुस्से में खड़ा हो जायेगा। जैसे ही ऊँट ऐसा करेगा नाव का संतुलन बिगड़ जायेगा। लोगों में अफरातफरी मच जायेगी और नाव डूब जायेगी। बन्दर ने छेड़छाड़ की, ऊँट उठा और इससे अफरातफरी मची और नाव डूब गई। हम सभी अपने स्वभाव से बंधे हैं।

गुग्लोयो मारकोनी की माँ को उसकी ज्यादा अक्लमंदी और होशियारी का जवाब मिल चुका था। उसकी माँ को दोनों के बीच अध्ययन के तरीके का अन्तर भी मालूम पड़ गया था। अब शिक्षक के बताए नए तरीकों से दूसरे बेटे को पढ़ाना शुरू कर दिया।

आगे चलकर यही गुग्लोयो मारकोनी नोबल पुरस्कार विजेता बना। इतालवी भौतिकशास्त्री गुग्लोयो मारकोनी ने बेतार के तार और

रेडियो का आविष्कार किया, जिससे संदेशों के आवागमन और प्रसारण में नए क्रांतिकारी युग का सूत्रपात हुआ। मारकोनी ने छोटे भाई की मदद से पहाड़ी के एक तरफ ट्रांसमीटर रखा और दूसरी तरफ रिसीवर। संदेश पहुँचने की देर थी कि छोटा भाई रिसीवर छोड़ पहाड़ी पर चढ़ कर नाचने लगा।

बाईपास सर्जरी क्या है?
What is Bypass Surgery?

कोरोनरी धमनियाँ वे रक्त–वाहिनियाँ हैं जो हृदय को खून की आपूर्ति करती हैं। ये वाहिनियाँ वसा आदि पदार्थों के जमा होने के कारण धीरे–धीरे संकुचित हो जाती हैं और फिर पूरी तरह या अधूरे तौर पर अवरुद्ध भी हो जाती हैं। जब ऐसा होता है तो हार्ट के एक विशेष भाग में खून की आपूर्ति कम या बिल्कुल बंद हो जाती है और रोगी के सीने में कम–ज्यादा दर्द होता है। इसे हार्टअटेक (हृदयाघात) कहते हैं, जिससे उसकी मृत्यु भी हो सकती है। डाक्टर लोग ऐसे रोगी की अपनी टाँग से नाड़ी के एक सिरे का टुकड़ा लेकर, उसे हृदय में जोड़ कर अवरुद्ध धमनी को बाईपास करके खून की आपूर्ति का वैकल्पिक मार्ग बनाते हैं। यह अवरुद्ध हो गई कोरोनरी धमनियों वाले रोगियों के उपचार की तकनीक है।

किसी एक विषय में कम अंक मिलने पर बहुत–से युवा व बच्चे दिल इतना छोटा कर लेते हैं कि खुद को इसमें बहुत कमजोर समझ लेते हैं। कम अंकों के मिलने का मतलब यही है कि उस विषय में अच्छे तरीके से अध्ययन, प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल में कहीं कमी रही है, ना कि किसी विषय में कम अंकों का मतलब है कि युवा कमजोर है। धोखा खाने का मतलब यह नहीं है कि इनसान बेवकूफ है। ऊँचे स्वाभिमान के युवा अपनी कमजोरी का मुकाबला करते हैं और उस विषय की कार्यक्षमता से अध्ययन की क्षमता को बढ़ाते हैं।

पानी की कोई भी गन्दगी ऐसी नहीं है जो क्रिया द्वारा दूर न की जा सके। युवाओं की अच्छे अंकों की कामयाबी टेनिस खेल जैसी है। जो अच्छी सर्विस करता है—वो शायद ही कभी हारता है। अंकों का लक्ष्य जितना अधिक होगा, उसका रास्ता, उतना लम्बा और बीहड़ हो सकता है—परन्तु कठिन हरगिज नहीं। नियमित अध्ययन और प्रैक्टिस से इस लम्बे रास्ते को भी आसान बनाया जा सकता है।

80/100 मार्क्स के लिए : दसवाँ कदम
Tenth Step : Towards 80/100 Marks

80/100 मार्क्स का लक्ष्य हमारे अध्ययन का रास्ता दिखाता है
Target of 80/100 Marks shows the path to our study

कोई भी लक्ष्य हमारे जीवन को रास्ता दिखाता है, भले ही वह अध्ययन के उद्देश्य से हो अथवा व्यापार के। इस दुनिया में हम सभी एक एक उद्देश्य हैं। लक्ष्य हमें उद्देश्य की तरफ ले जाता है। यह 80/100 प्रतिशत मार्क्स की ओर पहला कदम है। यदि हमने हमारे अध्ययन का लक्ष्य बना ही लिया है तो अगर हम इस लक्ष्य को भेद नहीं पाए तो भी क्या हुआ—हम उसकी परिधि में तो पहुँच ही जायेंगे। परन्तु बिना एक्शन और एक्शन प्लान के लक्ष्य कोरे खोखले सपने की तरह होता है। आपका अध्ययन जो कि 80/100 मार्क्स के लिए एक्शन ही है, वही सपनों को हकीकत के लक्ष्य में बदलता है। एक्शन प्लान और एक्शन से हर विषय के अध्ययन को, उसकी कसौटी पर परखते रहना चाहिए और सभी विषयों के लक्ष्यों की आपस में संगति और मेल होना चाहिए, अन्यथा आर्केस्ट्रा पार्टी में अगर हर कोई अपना इंस्ट्रूमेन्ट अलग धुन में बजा रहा हो तो उनकी राग का कोई महत्त्व ही नहीं रहेगा। 80/100 मार्क्स के उद्देश्य के बिना कोरी मेहनत और अध्ययन बेकार ही साबित होगा। इन मार्क्स के उद्देश्य की भरपाई में चिंता अगर कोई होती है तो वह गलत लक्ष्य की ओर भी ले जा सकती है।

परन्तु करीब 150 वर्ष पूर्व यातायात की सुविधा के लिए स्ट्रक्चरल इंजीनियरों (Structural Engineers) ने एक बड़े लक्ष्य का उद्देश्य हाथ में लिया तो नदी को पार करने के लिए शक्तिशाली पुलों के निर्माण की जरूरत महसूस हुई औरे एक नए किस्म के पुल (Bridge) को जन्म दिया—जिसे कैन्टीलीवर (Cantilever) पुल कहा जाता है जिसमें नदी के बीच में कोई खम्भा (Bridge) नहीं होता, बस, नदी के दोनों किनारों पर बने हुए खम्भों पर ही इसके दानों सिरे टिके हुए होते हैं। पुराने कैन्टीलीवर पुल पूरी तरह स्टील के बने होते थे, परन्तु लचीले होते थे। विश्व का पहला कैन्टीलीवर ब्रिज जर्मनी के हैंसफुर्ट में 1867 में हेनरी जर्बर ने बनाया था जिसकी लम्बाई 425 फुट है। दूसरा पुल 1890 में स्काटलैंड में क्वीन फेरी पर बनाया गया जिसकी लम्बाई एक मील है। भारत में इस प्रकार का पहला ब्रिज कोलकाता में हुगली

नदी पर 1943 में चालू किया गया जिसे हावड़ा ब्रिज के नाम से जाना जाता है। ऐसे पुल के निर्माण का आधार तकनीकी तौर पर हर जोइन्ट (Joint) पर सभी बलों (Forces) का Equilibrium होना होता है।

परन्तु दूसरी तरफ भारत के राष्ट्रपति भवन का निर्माण करने में दो दशक लगे, जिसमें 340 कमरे, 37 सैलून, 74 लॉबी, एक किलोमीटर लम्बा गलियारा और 37 कृत्रिम झरने भी हैं। उस जमाने का यह कितना बड़ा लक्ष्य था? लक्ष्य को पूर्ण करने में सबका मेल ही आखिर काम आता है। कोरे काल्पनिक लक्ष्य—उल्लू ही बनाते हैं—इनसान नहीं।

उल्लू के काल्पनिक लक्ष्य

एक बाज पेड़ के नीचे से गुजरा तो उसे दो उल्लू झगड़ते हुए दिखाई दिए।

पहला उल्लू—इस इमारत का मालिक मैं हूँ।

दूसरा उल्लू—क्या बकते हो? इसे तो मेरे पूर्वजों ने बनाया था, इसका मालिक मैं हूँ।

पहला उल्लू फिर बोला—तुम्हारे पूर्वज कितने बड़े लुटेरे थे, यह बिरदारी के सभी उल्लू जानते हैं।

दूसरा उल्लू गुर्राया और बोला—जुबान सम्भ्हाल के बात करो, नहीं तो .....

दोनों आपस में झगड़ने लगे।

बाज ने उन दोनों को शांत करवाया और बड़ी गंभीरता से उस क्षेत्र का निरीक्षण करने लगा। दूर-दूर तक किसी इमारत का नामोनिशान नहीं था। वैसे भी, वह यह सोच कर दंग था कि उल्लू दिन में कब से देखने लगे, फिर भला इमारत का देखना कितना काल्पनिक था।

वह उल्लूओं को समझाते हुए बोला, आप दोनों की तीव्र और कुशाग्र बुद्धि काबिले-तारीफ है। अपनी-अपनी जगह आप दोनों सही हैं। इमारत किसकी है? इसका फैसला बिरादरी की आम सहमति से हम कर देंगे, यह कह कर उसने दोनों उल्लुओं को पहचान के लिए अलग-अलग रंग की टोपियाँ पहनने के लिए दे दी।

उल्लू बिरादरी के लोगों का दिनभर उन दोनों उल्लूओं के पास जमघट रहने लगा। दोनों उल्लू अपने रंगों की टोपियाँ पहचान के लिए पहनने लगे। सहमति जानने के लिए जब बाज क्षेत्रीय भ्रमण को निकला तो हर पेड़ की डाल पर टोपियों वाले उल्लू बैठे थे और उस काल्पनिक इमारत के लिए आपस में फिर झगड़ रहे थे। काल्पनिक लक्ष्य उल्लू ही बनाते हैं और वो भी दिन में। हार कर बाज इसी निर्णय पर पहुँचा कि लक्ष्य स्पष्ट और ठोस होना चाहिए।

अध्ययन के समर्पण में शक्ति

अंकों और परीक्षा की तैयारी में आत्मविश्वास और स्वाभिमान तभी पैदा होगा जब युवा अपने अध्ययन और विषय के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हों। अकसर आपने देखा होगा कि मन्दिर में दाखिल होने वाले सभी लोग मूर्ति के सामने झुकते हैं, नमन करते हैं, कुछ चढ़ावा चढ़ाते हैं, कुछ प्रार्थना करते हैं और चले जाते हैं। मूर्ति के सामने समर्पण के उन क्षणों में व्यक्ति के भीतर अलग–अलग कामनाएँ हो सकती हैं—परन्तु समपर्ण के वे क्षेत्र सबकी व्यक्तिगत पूँजी बन जाते हैं, जिन्हें लेकर वे व्यक्ति अपनी शेष दिनचर्या आशा और उत्साह में व्यतीत करते हैं। यही बात टीनएजर्स के अध्ययन पर भी लागू होती है। अध्ययन के समय में, युवाओं को मन्दिर की मूर्ति के सामने समर्पण के क्षणों की तरह खो जाना होता है, तभी 80/100 मार्क्स का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। अध्ययन का समय भले ही थोड़ा हो, परन्तु हो पूर्ण रूप से विषय अथवा चैप्टर के प्रति समर्पित।

अध्ययन में समर्पण से दूर रहने वाले युवा तपती हुई रेत का टीला बन जाते हैं जो आंधियों और तूफानों में इधर–उधर भागता रहता है और जिसका स्वरूप हर बार बदलता रहता है। जिसकी अपनी कोई पहचान बन ही नहीं पाती। अध्ययन में समर्पण, एकाग्रता एक कला है, जो विषय अथवा चैप्टर को समझने में निखार पैदा करती है। अध्ययन की विफलता के अंधेरे से बाहर निकलने के लिए विषय के प्रति समर्पित हो जाइए, तभी 80/100 मार्क्स की मर्यादा को बचा पाएंगे। अतीत को मत याद करो, क्योंकि अतीत के बारे में सोच कर समय बरबाद करना बुद्धिमानी नहीं है। युवा जब अपनी स्मृतियों की खोज में उतरता है तो उसे अपनी ही बिरादरी के ऐसे युवा ही आकर्षित करते हैं जिन्होंने अध्ययन और परीक्षा में साधारण अंक ही प्राप्त किए हों। अतः

बीते जीवन के इतिहास की अंधेरी गलियों में प्राप्त साधारण अंकों को भूल कर 80/100 अंकों के अध्ययन के नए तरीके आजमा कर, नया रिकार्ड बनाओ। क्योंकि आखिरकार 80/100 मार्क्स जीवन का एक सुधार है और आप उसके बेहतर हकदार हैं। कोई भी तर्क, प्रयास और अध्ययन, कम अंकों के भय को दूर भगा सकता है।

पूरा जीवन समर्पित करने वाला जिराफ कभी जमीन पर नहीं लेटता, बल्कि हमेशा खड़े–खड़े ही सोता है। यह भी कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि वह 24 घण्टे में सिर्फ 20 मिनिट के लिए ही सोता है परन्तु बढ़ती उम्र के साथ वह नींद की अवधि भी बढ़ाता है परन्तु इनसान की बढ़ती उम्र के साथ उसकी त्वचा में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं।

त्वचा में झुर्रियाँ और उम्र

इनसान की त्वचा उसके शरीर का ऊपरी आवरण है जो अंदरूनी अंगों की रक्षा करता है और गर्मी तथा पीड़ा की जानकारी भी देता है। विषाणुओं और कीटाणुओं से हमारे शरीर की रक्षा तो करता है, साथ में तापक्रम को भी नियंत्रित करता है। मानव–शरीर की त्वचा का औसतन भार तीन किलोग्राम होता है, जैसे–जैसे मनुष्य वृद्ध होता है, उसकी मांसपेशियाँ कमजोर पड़ने लगती हैं, जिससे चमड़ी ढीली पड़ने लगती है और उस पर झुर्रियाँ पड़ने लग जाती हैं। युवा अवस्था में हमारे शरीर में एस्ट्रोजन नामक हार्मोन पैदा होता है जो त्वचा को खिंचावपूर्ण स्थिति में रखता है। इस उम्र में इलास्टिन नामक प्रोटीन भी शरीर में अधिक मात्रा में होता है जिससे त्वचा के अन्दर लचीलापन रहता है। दरअसल जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी त्वचा काफी ढीली होती है लेकिन 6 महीने के अन्दर ही उसकी त्वचा में तनाव आ जाता है।

परन्तु अभ्यास में परिश्रम कभी भी ढीलापन नहीं ला सकता। भले ही मि. डिमास्थनीज बोलने में तुतलाते थे, बल्कि हकलाते भी थे....

चाणक्य की सलाह Advise of Chanakya

परिश्रम और निरन्तर अभ्यास को चाणक्य ने जीवन के उत्थान के लिए, जिसमें चाहे विद्यार्थी जीवन ही क्यों ना हो—सबसे महत्त्वपूर्ण सीढ़ी माना है। मि. डिमास्थनीज बोलने में न केवल तुतलाता था, बल्कि हकलाता भी था। एक दिन वह अपने नगर की शानदार सभा

में प्रसिद्ध वक्ता का भाषण सुनकर बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ और उसने मन ही मन अच्छा वक्ता बनने का संकल्प भी कर लिया। बस, फिर क्या था, वह नियमित रूप से सागर के तट पर पहुँच कर सागर की लहरों को ही अपना श्रोता मान कर जोर-जोर से भाषणों का प्रैक्टिकल विभिन्न प्रयोगों के साथ करने लगा और वह भी अत्यन्त नाटकीय प्रदर्शन के साथ। उसके द्वारा नियमित रूप से किया गया अभ्यास में समर्पण ऐसा रंग लाया कि वह थोड़े ही दिनों में देश का बहुत बड़ा एवं प्रसिद्ध वक्ता बन गया।

कोई भी विद्यार्थी या इनसान हो—बिना किसी परिकल्पना, जिसमें उसका उद्देश्य चाहे 80/100 मार्क्स से अधिक ही पाना हो, वह उस उन्मत्त सागर की लहरों पर यात्रा करते हुए उस जहाज के समान है जिसके पास न दिग्सूचक और न कोई दिशा है, न कोई उद्देश्य और न कोई लक्ष्य, चारों ओर धुआँ ही धुआँ। कोई तस्वीर साफ नजर नहीं आती। अभ्यास और परिश्रम की कमी से परीक्षा नजदीक आते ही आलसी विद्यार्थी अपनी शक्ल-सूरत और किताबों के पन्ने देख कर डरने लग जाता है। सचमुच समय बदल गया है। किसी भी चीज या विषय के बारे में हमारी सोच और समर्पण का नजरिया एक ऐसा साधन है जो हमें प्रत्येक वस्तु या विषय के बारे में अच्छा सोचने की कला सिखाता है।

प्रजेन्ट के लिए खुद को परफैक्ट बनाएँ

— डा. राम बजाज